सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण: विशेष संदर्भ रूमटेक एवं इनचे मठ

Study and Analysis of the Theatrical Dance Forms Prevalent in the Buddhist Monasteries of Sikkim: Special Reference Rumtek and Enchey monastery

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अंतर्गत एम.फिल. प्रदर्शनकारी कला विभाग (नाटक एवं फ़िल्म)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र 2016-17

निदेशक
डॉ. ओम प्रकाश भारती
विभागाध्यक्ष
प्रदर्शनकारी कला विभाग

प्रस्तुतकर्ता
शैंकी जैन
एम.फिल.
प्रदर्शनकारी कला विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित हिन्दी विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, पोस्ट: हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा-442005 (महाराष्ट्र), भारत

डॉ. ओमप्रकाश भारती
विभागाध्यक्ष
प्रदर्शनकारी कला विभाग

दिनांक :

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जा **शैंकी जैन** ने मेरे मार्गदर्शन में **सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण: विशेष संदर्भ रूमटेक एवं इनचे मठ**' विषय पर अपना एम.फिल. शोध कार्य पूरा किया है। यह लघु शोध-प्रबंध साहित्य विद्यापीठ के प्रदर्शनकारी कला **एम.फिल. सत्र : 2016-17** के लिए जमा किया गया है।

मैं इस शोध कार्य को मूल्यांकन हेतु सहर्ष अग्रसारित करता हूं।

(डॉ. ओमप्रकाश भारती)

आभार

आभार शब्द औपचारिकता मात्र सा प्रतीत होता है। इस शोध में हर कदम पर कुछ लोगों का साथ हमेशा रहा। जिनके कारण यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। सर्वप्रथम अपनी माँ, भाई, भाभी और बहन का आभार देना चाहूँगा, जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया तथा जीवन के हर कदम पर मेरा साथ दिया।

मैं अपने मार्गदर्शक तथा शोध निदेशक डॉ॰ ओमप्रकाश भारती जी का आभार देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस विषय पर कार्य करने का मौका दिया साथ ही विषय से संबन्धित हर पहलुओं पर चर्चा की ताकि मुझे इस विषय पर गहराई से समझ हो सके। मैं प्रदर्शनकारी कला विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सतीश पावड़े, डॉ. अविचल गौतम, डॉ. अश्विनी कुमार सिंह, डॉ. सुरभि विप्लव एव अभिषेक जी का आभार देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस विषय पर कार्य करने हेतु हर संभव सहायता की।

मैं विश्वविद्यालय के कुलपति जी का आभार देना चाहता हूँ जिन्होंने शोध के लिए अनुकूल वातावरण हमें प्रदान किया।

मैंने विषय से संबन्धित सामाग्री के लिए कुछ संस्थानों की भी सहायता ली गई। जिनको में आभार देना चाहता हूँ। संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रूमटेक मठ, इनचे मठ इत्यादि संस्थाओं के सभी सदस्यों का आभार देना चाहता हूँ, जिन्होंने बिना किसी रुकावट के सामग्री प्राप्त करने में सहायता की।

मैं अपने मित्रों शिशुपाल, अशोक बैरागी, विष्णु कुमार, कुमार गौरव इन सभी के साथ शालिनी झा का आभार देना चाहता हूँ, जिन्होंने शोध पूर्ण करने में हर संभव मदद की।

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ संख्या
अध्याय -1 प्रस्तावना एवं साहित्य पुनरावलोकन	1-16
अध्याय -2 सिक्किम के बौद्ध स्थापत्य एवं संगठन	17-33
अध्याय-3 सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूप (अभिनय पद्धति, वेषभूषा, मुखौटे)	34-59
अध्याय -4 बौद्धकला दर्शन तथा बौद्ध नाट्य रूप	60-73
✓ उपसंहार	74-80
➢ परिशिष्ट	81-103
➢ संदर्भ ग्रंथ सूची	104 -106

CHAPTER

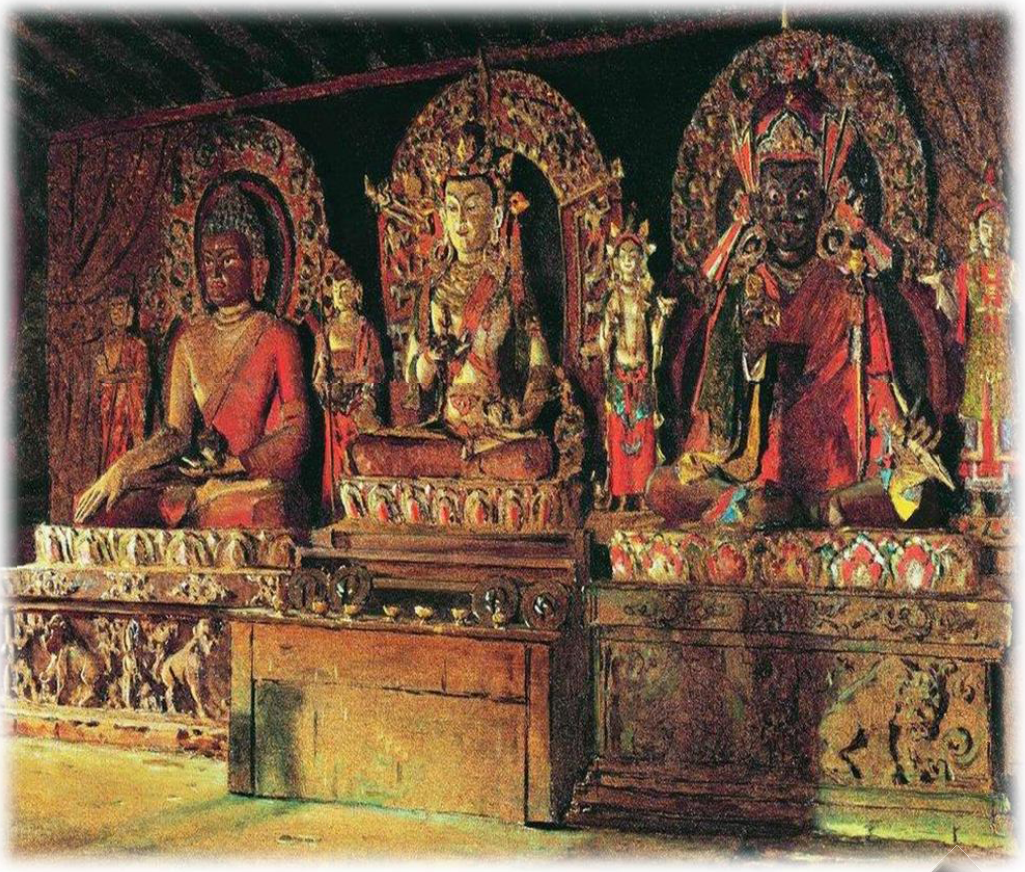

अध्याय-1

प्रस्तावना एवं साहित्य पुनरावलोकन

1

प्रस्तावना

सिक्किम का प्रारंभिक इतिहास 13 वीं शताब्दी से आरंभ होता है जब लेप्चा प्रमुख थेकोंग-थेक और तिब्बत के राजकुमार खे-भूमसा के बीच उत्तरी सिक्किम में काब लुंगत्सोक में भाईचारे के एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसके बाद सन 1641 में तिब्बत के सम्मानित लामा संतों ने पश्चिमी सिक्किम के युकसाम प्रांत की ऐतिहासिक यात्रा की, जहां उन्होंने खे-हूमसा के छठी पीढ़ी के वंशज फुंत्सोग नामग्याल राजवंश का उदय हुआ। समय के बदलाव के साथ सिक्किम लोकतांत्रिक प्रक्रिया से गुजरा और 1975 में वह भारतीय संघ का अभिन्न अंग बन गया। गुरु पद्मसंभव ने अपने तिब्बत प्रवास के दौरान इस स्थान को आशीर्वाद दिया था। सिक्किम में सभी समुदायों के लोग आपसी सद्भवाव से रहते हैं। सिक्किम में भिन्न-भिन्न मतों से जुड़े लोग हैं और शायद यह भारतीय संघ में सांप्रदायिक सद्भाव और मानवीय संबंधों को बढ़ावा देने वाला सर्वाधिक शांति वाला राज्य है जिसकी भारत जैसे बहुसामाजिक व्यवस्था वाले देश में नितांत आवश्यकता भी है।

सिक्किम राज्य के कई नाम हैं। लेप्चाओं के द्वारा इसे न्ये-माए-एल कहा जाता है जिसका मतलब है 'स्वर्ग', लिम्बू समुदाय के लोग इसे 'सू खिम' कहते हैं जिसका मतलब होता है 'नया घर'। और भूटिया समुदाय के लोग इसे 'बेयमुल' कहते हैं।

सिक्किम में विविध समुदाय के लोग रहते हैं, प्रत्येक समुदाय अपने क्षेत्र की निष्पादन कलाओं में अपना योगदान दे रहा है। सबसे पहले 'लेपचा' जाति के लोग आकर सिक्किम में बसे। उसके पश्चात् 'भूटिया' आए जो तिब्बत और भूटान से आए, जो प्राचीन बसने वाले लोगों के वंशज हैं और अंत में

नेपाली आए जो नेपाल से आकर सिक्किम में बस गए। इनमें से प्रत्येक का सामाजिक अथवा धार्मिक उत्सव लोक गीतों तथा नृत्यों के लिए रंगपटल भिन्न है।

सिक्किम का प्रमुख बौद्ध मठ पेलिंग में स्थित पेमायांत्से है। इसके अलावा यहां पश्चिमी सिक्किम ताशिदिंग मठ भी है, जो सिक्किम के सभी मठों में सबसे पवित्र माना गया है। सिक्किम का सबसे प्राचीन मठ युकसोम है, जिसे ड्रबडी मठ के नाम से जाना जाता है। यह लहातसुन चेन्पों (सिक्किम के प्रमुख संत) का व्यक्तिगत आश्रम था जो संभवत: 1700 ईसवी में बना था। कुछ अन्य मठों का नाम हैं - फोडोंग, फेन्सांग, रुमटेक, नगाडक, तोलुंग, आहल्य, त्सुकलाखांग, रालोंग, लाचेन, एन्चेय।

सिक्किम के प्रमुख मठों दो प्रमुख एवं चर्चित नाम है रूमटेक एवं एंचेय।

'एंचेय मठ' गंगटोक के प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मठ पूजा का बहुत ही पवित्र और सुंदर स्थान है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, यह मठ जो बौद्ध धर्म के वज्रयना न्यिन्गामा समाज के अंतर्गत आता है, एक ऐसे स्थान में मौजूद है, जिस पर लामा द्रुपथेब करपो का आशीर्वाद बरसता है। 'एंचेय मठ' का अर्थ है- 'एकान्त मठ' और इसके अतिरिक्त एक और कथन है कि यह जगह हमारी रक्षा करने वाले देवताओं 'कांगचेन्डजोंगा' और 'याबडियान' की उपस्थिति के लिए पवित्र है। यह मठ हर साल कुछ महत्वपूर्ण त्यौहार मनाता है, जैसे- 'डेटोर चाम/ चाम नृत्य महोत्सव', 'सिंघे चाम' और 'पंग लभसोल'।

रुमटेक मठ जिसे धर्मचक्र केंद्र के नाम से भी जाना जाता है, भारत का सबसे बड़ा बौद्धिक मठ है, जिसकी यात्रा पर आप एक बार ज़रूर ही जाएँ। तीर्थस्थान होने के साथ साथ, यह स्थान समुद्री तल से 5000 फीट पहाड़ पर गंगटोक के तरफ फेस करके बसा है। एक सोने का स्तूप मठ के अंदर ही स्थापित है जिसमें 16वें कर्मापा के अवशेष हैं। इस पूरे मठ के परिसर में एक तीर्थ मंदिर, एक मुख्य मठ, एक रिट्रीट

केंद्र, एक संरक्षक मंदिर, भक्तीनों के लिए धर्मशाला, मठवासियों के लिए विद्यापीठ, और कुछ प्रतिष्ठानों के लिए कई संस्थाएँ भी हैं।

रुमटेक में, हर महीने, एक या दो सप्ताह के लिए आयोजित एक पूजा समारोह है। तिब्बती नव वर्ष दिवस, लॉसर, बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। लामो के प्रदर्शन के साथ अगले दो दिनों तक उत्सव जारी रहता है। हालांकि, लॉसर के उत्सव से पहले, मठ के भिक्षुओं ने महाकाल के सम्मान में एक सप्ताह तक पूजा की। लॉसार की पूर्व संध्या पर पीते हुए पिछले दो दिनों में रितिक नृत्य होते हैं हाल ही में, मठ के इतिहास में पहली बार, सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए नृत्य का प्रदर्शन खोला गया था। चौथे तिब्बती माह (मई-जून) के दौरान पारंपरिक चाम प्रदर्शनों के साथ एक हफ्ते भर वाले वजीराकिलया (दुबेचेन) या गुरु पद्मशंभव त्च्छू पूजा के साथ हर वैकल्पिक वर्ष का आयोजन किया जाता है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा हर साल 26 जून को कर्मम्पा के जन्मदिन को कम करने के लिए भी प्रदर्शन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में सिक्किम के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सिक्किम के बौद्ध मठों, प्रशासनिक व्यवस्था एवं उत्सवों पर प्रकाश डाला गया है। शोध में विशेष तौर पर सिक्किम के प्रसिद्ध रुमटेक एवं एंचेय मठ में होने वाले नृत्य प्रदर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इन मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्य के अभिनय, मुखौटे, वेशभूषा को प्रस्तुत किया गया है।

शोध के पहले अध्याय **'प्रस्तावना एवं साहित्य पुनरावलोकन'** में शोध का स्वरूप एवं शोध विषय से संबन्धित पुस्तकों, आलेखों इत्यादि को प्रस्तुत किया गया है।

शोध के दूसरे अध्याय **'सिक्किम के बौद्ध स्थापत्य एवं संगठन'** में सिक्किम के एतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सिक्किम के प्रमुख बौद्ध मठों, नृत्यों, उत्सवों का परिचय

दिया गया है। अध्याय में सिक्किम के बौद्ध मठों के परिचय के साथ उनके वास्तुकला, स्वरूप इत्यादि को भी रेखांकित किया गया है।

शोध के तीसरे अध्याय **'सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूप (अभिनय पद्धति, वेषभूषा, मुखौटे'** में सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्यों, उनके स्वरूप, उद्भव, अभिनय, वेषभूषा एवं मुखौटे इत्यादि पर प्रकाश दाल गया है। सिक्किम के बौद्ध मठों में सिंह चाम, ब्लैक हेट, स्केलटन चाम इत्यादि नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं।

शोध के चौथे अध्याय **'बौद्धकला दर्शन तथा बौद्ध नाट्य रूप'** में बौद्ध धर्म के इतिहास, दर्शन एवं कला रूप पर प्रकाश डाला गया है इसके साथ ही बुद्धिष्ट रंगमंच के इतिहास एवं इसके स्वरूप पर विस्तार से चर्चा है।

साहित्य पुनरावलोकन

- सिक्किम में तिब्बती संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। यहाँ सैकड़ों पर वर्ष पुराने बौद्ध मठ सिक्किम की पहचान है। इन बौद्ध मठों में बुद्ध धर्म के दर्शन, बुद्ध के विचारों एवं गुरुओं की शिक्षा का प्रचार किया जाता है।
- सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रत्येक वर्ष नृत्य इत्यादि का आयोजन होता है। विविध रंगों के वस्त्र एवं मुखौटे के साथ प्रस्तुत होने वाले इन नृत्यों में हम बुद्ध धर्म से संबन्धित कथाओं, दर्शन को देख सकते हैं।

शोध की प्रासंगिकता

बोध धर्म को मानवता का धर्म कहा जाता है। हजारों वर्ष पुराने इस धर्म का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में हैं और बौद्ध अनुयायी सम्पूर्ण विश्व में भगवान बुद्ध के विचारों का प्रचार करते हैं। बौद्ध धर्म की एक प्रमुख विशेषता है कि बौद्ध धर्म में कला का पक्ष भी विशेष है। बौद्ध मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला इत्यादि को हम विश्व के कई देशों में देख सकते हैं। बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्यों ने बुद्ध के विचारों को प्रदर्शकारी कला के माध्यम से आज तक जीवंत रखा है। तिब्बत से सटे सिक्किम में कई बौद्ध मठ प्रसिद्ध है और इनमें प्रस्तुत होने वाले नृत्य नाट्य रूपों की वैश्विक पहचान है। प्रस्तुत शोध बौद्ध धर्म की इसी विशेष परंपरा को सामने रखता है, जो न केवल एतिहासिक दस्तावेज़ के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि यह शोध बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्य नाट्य रूपो के कई पहलुओं को भी प्रस्तुत करता है।

शोध का महत्व एवं उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध बौद्ध कला दर्शन, इसकी परंपरा एवं स्वरूप को समझने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।
- प्रस्तुत शोध के माध्यम से सिक्किम में बुद्ध धर्म के उद्भव एवं विकास, सिक्किम के बौद्ध मठों की विस्तृत जानकारी एवं इन मठों में प्रस्तुत होने वाली कलाओं की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

- सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्य नाट्य रूपों का स्वरूप क्या है इनकी अभिनय पद्धति, वेषभूषा एवं मुखौटों की किता विशेषता है इन सब उद्देश्यों के साथ शोध को प्रस्तुत किया गया है।

शोध की सीमा

बौद्धकला दर्शन का हजारों वर्षों का इतिहास है। वैश्विक स्तर पर इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक जहां बौद्ध धर्म का विस्तार है। भारत में तिब्बत से सटे क्षेत्र, जिनमें सिक्किम प्रमुख है यहाँ बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव है। यहाँ कई सैकड़ों वर्ष पुराने बौद्ध मठ एवं इनकी कला परंपरा है। अतः शोध में सिक्किम के दो प्राचीन एवं प्रसिद्ध मठों रूमटेक एवं एंचेय मठ को केंद्र में रखा गया है। शोध में इन मठों के परिचय के साथ इन मठों की नृत्य-नाट्य परंपरा पर प्रकाश डाला गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में शोध विषय से संबन्धित संस्थानों का अवलोकन किया गया। संस्थानों से जुड़े व्यक्तियों से नृत्य परंपरा पर चर्चा की गयी एवं आवश्यक सामग्री का संकलन किया गया। शोध विषय से प्राप्त सामग्री का संकलन भी किया गया। शोध विषय की विस्तृत जानकारी हेतु सिक्किम के नृत्यों से संबन्धित वीडियो इत्यादि का भी अध्ययन किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोध प्राविधि हैं| प्रस्तुत शोध में क्षेत्र सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया जाएगा साथ शोध विषय से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग सहायक रूप में किया जाएगा.

तथ्य संकलन-

प्राथमिक स्रोत -

अवलोक विधि (observation)

साक्षात्कार (Interview)

प्रश्नावली विधि (Questionnaire) आदि।

द्वितीयक स्रोत -

विषय से संबन्धित प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाओं के आलेख, वीडियो तथा अन्य स्रोतों का अध्ययन।

साहित्य पुनरावलोकन

किसी भी शोध कार्य को करने से पूर्व उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन, समस्या के बारे में कुछ विशिष्ट प्रकृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकरी प्राप्त करने में सहायक होता है. अध्ययन के समय ऐसी अनेक परिस्थितियां सम्मुख आती है, जिन्हें पार करने के लिए निर्धारित योजना का विकल्प अन्वेषित करना पड़ता है. अतः ऐसी समग्र परिस्थितियों का ज्ञान होना परमआवश्यक है ताकि पहले से ही विकल्पों की समुचित व्यवस्था की जा सके. इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन के द्वारा शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अध्ययन को किन-किन दिशाओं में मोड़ने से अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है.

पुनरावलोकन का अर्थ उन विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, लेख, संगोष्ठी, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रंथों, ज्ञान कोशों तथा अभिलेखों से हैं, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पना के निर्माण, अध्ययन की प्ररचना बनाने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है. शोधकर्ता को अपने विषय में जब तक यह ज्ञान नहीं होगा कि सैद्धांतिक व् क्रियात्मक दृष्टि से कितना कार्य, किस विधि से किया जा चुका है तथा उसके निषकर्ष क्या निकले हैं, तब तक न तो वह समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी प्ररचना तैयार करके कार्य को आगे बढ़ा सकता है.

साहित्य का पुनरावलोकन किसी शोध प्रकरण पर चयनित दस्तावेज तथा दस्तावेजों का प्रभावशाली मूल्यांकन है. अर्थात शोध कार्य का पुनरावलोकन शोधार्थी द्वारा पूर्व में किए गये शोध कार्य का व्यवस्थित एवं आलोचनात्मक संश्लेषण है. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता में अपने शोध कार्य के

प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है, कार्य की पुनरावृत्ति से बचता है तथा संभावित कठनाइयों के प्रति सजग रहता है. इसके साथ ही प्राप्त परिणामों की तर्कसंगत विवेचना कर परिणामों/निष्कर्षों को युक्तिसंगत बनाता है.

साहित्य का पुनरावलोकन करने का उद्देश्य शोध कार्य के लिए एक निश्चित वातावरण प्रदान करना तथा शोध कार्य की सार्थकता की दृष्टि प्रदान करता है. यह सुनिश्चित करना कि इस प्रकार का कार्य पहले नहीं हुआ या किया जाने वाला कार्य महज पुनरावृत्ति नहीं है. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अपनी शोध समस्या को विशिष्ट स्वरूप देना और समस्या परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करना संभव होता है. पूर्व में किए गए शोध कार्य का अध्ययन वर्तमान में किए जाने वाले शोध अध्ययन के अंतराल तथा प्रसंगिकता को प्रतिपादित करना होता है.

प्रस्तुत शोध विषय 'सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण: विशेष संदर्भ रूमटेक एवं इनचे मठ' को लेकर शोध कार्य नहीं हुआ है. यह अवश्य है कि इस विषय से संबन्धित संबंधित पुस्तकें आधार रूप में प्राप्त होती है।

सुत्तासार

सुत्तासार या सुत्ता पिताका बौद्ध धर्म की मुख्य धार्मिक पुस्तक मानी जाती है। सुत्ता पिताका "त्रिपिताका" के प्रथम तीन भागों का संकलन है। सुत्ता सार में 10,000 से अधिक सुत्ता या बौद्ध शिक्षाओं का संकलन है। सुत्तासार मुख्य रूप से बुद्ध की मृत्यु के बाद की घटनाओं का वर्णन करती है। इस किताब में बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के हुए सम्मेलनों और उसमें किए गए निर्णयों के विषय में संक्षेप में लिखा गया है।

सुत्तासार को पांच भागों में बांटा गया है

दीघ निकाय या बड़े प्रवचन (Digh Nikaya): इस भाग में प्रगतिशील जीवन की रूपरेखा, मन के विचारों, बुद्ध के अंतिम दिनों आदि का वर्णन है। इस भाग में 34 लंबे सुत्ता यानि प्रवचन हैं।

मज्झिम निकाय (Majjhima Nikaya): इस भाग में 152 मध्यम प्रवचनों का संग्रह है। इस भाग में काम, मन और तन की शांति आदि के विषय में वर्णन किया गया है।

सम्युत्ता निकाय (Samyutta Nikaya): इस भाग में छोटे प्रवचनों को शामिल किया गया है। इस भाग में बौद्ध धर्म के इतिहास की विभिन्न घटनाओं का वर्णन है।

अंगुत्तरा निकाय (Anguttara Nikaya): इस भाग में विभिन्न पदों द्वारा महात्मा बुद्ध और उनके शिष्यों के बीच हुए वार्तालाप और शिक्षाओं का वर्णन है।

खुद्दका निकाय (Khuddaka Nikaya): यह भाग बेहद रोचक है। इस भाग में महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को लयबद्ध रूप में पेश किया गया है।

धम्मपद

धम्मपद भगवान बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं का कवितारूप में विस्तारपूर्वक संग्रह है। यह सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली बौद्ध ग्रंथ है। इसे गीता के समान ही पवित्र माना जाता है। धम्मपद का अर्थ है सत्य का मार्ग। धम्मपद का महत्त्व (Importance of Dhammapada) इस ग्रंथ में जीवन-मरण, घर-परिवार, समाज,

नीति, युद्ध आदि विभिन्न विषयों पर नीति वाक्य लिखें हैं। बौद्ध धर्म में इस ग्रंथ का महत्त्व बेहद अधिक है। बौद्ध साधु अकसर इसी ग्रंथ का प्रयोग अपने प्रवचनों में करते हैं।

धम्मपद की विशेष बातें

धम्मपद में 26 अध्यायों में 423 पद हैं।

- धम्मपद को विभिन्न ग्रंथों से लिया गया है। धम्मपद में विभिन्न भाषाओं की भी प्रयोग है।
- धम्मपद पुस्तक को थेरवाद और महायान दोनों तरह के बौद्ध भिक्षुओं द्वारा मान्यताप्राप्त है।
- श्रीलंका में इस किताब को नवदीक्षित भिक्षुओं के मार्गदर्शन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

अभिधम्म

अभिधम्म या अभिधम्म पिताका "पाली कैनन" नामक ग्रंथ का अंतिम भाग है। अभिधम्म पिताका विभिन्न बौद्ध शिक्षाओं या धम्म का वर्गीकरण और योजनाबद्ध रूप में संकलन है। यह एक व्यवस्थित दार्शनिक ग्रंथ है।

अभिधम्म के मुख्य बिन्दु (Main Points of Abhidhamma)

अभिधम्म पिताका में बौद्ध धर्म की जिन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है वह निम्न हैं:

- मनोविज्ञान सिद्धांत
- दर्शन शास्त्र

- बौद्ध धर्म की कार्यप्रणाली और व्यवस्था

महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन में ज्ञान प्राप्ति के बाद ही अभिधम्म का संदेश दिया था। इसके बाद महात्मा बुद्ध ने विभिन्न वर्षों में अपने अनुयायियों को यह संदेश दिया।

अभिधम्म पिताका के भाग (Parts of Abhidhamma)

अभिधम्म पिताका के सात भाग निम्न हैं:

- धम्मसंगिनी
- विभांगा
- धतुखता
- पुग्गलपंत्ती
- खत्वत्थु
- यमका
- पत्थना

विनय पिताका

बौद्ध धार्मिक पुस्तकों में विनय पिताका एक अहम किताब मानी जाती है। यह बौद्ध धर्म की सबसे प्रमुख किताब "त्रिपिताका" को अहम भाग है। इस किताब का मुख्य विषय बौद्ध भिक्षुओं की जीवनशैली और उसके नियम हैं।

विनय पिताका का उद्गम (Origin of Vinaya Pitaka)

विनय पिताका भी भगवान बुद्ध के जीवन के बाद लिखी गई है। हालांकि इसको समय-समय पर संशोधित भी किया गया है।

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को "धम्म विनय" कहा जाता है। विनय पिताका में बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांतों, नियमों, आचार संहिता आदि का वर्णन है। इस किताब की मुख्य शिक्षाएं स्वयं भगवान बुद्ध द्वारा बताई गई है। इसी किताब के आधार पर बौद्ध भिक्षु अपनी जीवन निर्वाह करते हैं। इस किताब को बौद्ध आचार संहिता के रूप में भी देखा जाता है।

बुद्ध, माणिक मुंडे, वाणी प्रकाशन

बुद्ध ने नास्तिक को भी धार्मिक होने का मार्ग खोला,यह अपूर्व क्रांति है। बुद्ध ने कहा, "नास्तिक हो; ठीक है, भले हो, आओ, क्योंकि ध्यान करने में तो नास्तिक को भी बढ़ा नहीं हो सकती है।" बुद्ध अनूठे हैं। ध्रुवतारे हैं। तारे तो बहुत हैं लेकिन ध्रुव तारा एक ही है। बुद्ध के साथ मनुष्य की चेतना के इतिहास में एक नए अध्याय का सूत्रपार हुआ है। जी किनारे खड़े होकर सागर की गहराई के संबंध में जो केवल वर-प्रतिवाद कर रहें हैं और मात्र आलोचना में धन्यता मान रहें हैं, उनसे 'बुद्ध सागर में डुबकी लगाकर गहराई बन जाने का यह किताब निवेदन करती है।

बौद्ध धर्म का लोक कल्याणकारी स्वरूप, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, भारती प्रकाशन, वाराणसी

बौद्ध धर्म का भारत में उद्भव मानव विकास के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. इस धर्म का विकास मानव को दुःख से मुक्त कराने के सन्दर्भ में हुआ.इस प्रकार से लोक कल्याण इस धर्म की मूल प्रवृत्ति है.प्रस्तुत पुस्तक में बौद्ध धर्म के इसी पक्ष को उभारने का प्रयास किया गया है.इस विषय को केन्द्रित रखने के सन्दर्भ में पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित करके बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है. प्रथम अध्याय में बौद्ध धर्म की भूमिका,धर्म की परम्परागत हिन्दू व्याख्या एवम् धर्म के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है. दूसरा अध्याय बोधिसत्व की अवधारणा को रेखांकित किया गया है. बौद्ध धर्म के लोक कल्याणकारी स्वरूप के विकास में इस धर्म की अवधारणा का विशेष महत्व है.बौधों की सामाजिक दृष्टि अत्यंत क्रांतिकारी रही है. इस विषय को तीसरे अध्याय में प्रकाशित किया गया है. चौथा अध्याय स्त्रियों के सन्दर्भ में बौद्ध दृष्टिकोण को विश्लेषित किया गया है. पंचम अध्याय बौद्ध नैतिकता की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है. तत्कालीन समय में प्रचलित अन्य नैतिक परम्पराओं पर बौधों की आलोचनात्मक दृष्टि को भी इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है. षष्ट अध्याय में ब्रह्म-विहार की अवधारणा का विश्लेषण किया गया है.मानव की नैतिक प्रगति में ब्रह्म-विहार के मूल तत्व को विश्लेषित किया गया है.

शोध विषय से सम्बंधित पुस्तकें-

- Buddha – vachan., 99999990233624. Bikshu, Aanand kaushalyayan. 1954. hindi. Vachan sangrah. 99 pgs.
- Buddha – vani., 99999990233626. Viyogi hari. 1935. hindi. NULL. 163 pgs.
- Buddha Aur Naachghar., 5990010124474. Bachchan. . hindi. Literature. 186 pgs.
- Buddha charitawali., 1990010087251. Ram Chandra Lal. 1953. hindi. Buddha-Biography. 129 pgs.
- Buddha charrya., 99999990243331. Aacharya, Tripitak. 1931. hindi. Jivani – Bhagvan Buddha. 654 pgs.
- Buddha chitrawali., 1990010087252. Vidya. 1956. hindi. Buddha-Biography. 63 pgs.
- Buddha dharm ke upadesh., 1990010087253. Dharmarakshit. . hindi. Buddha religion. 149 pgs.
- Buddha-charit., 5990010044621. . 1979. hindi. Literature. 298 pgs.
- Buddham Sharanam., 5990010114124. Chandra Dev Singh. 1956. hindi. LANGUAGE. LINGUISTICS. LITERATURE. 130 pgs.

- Gautam buddha., 5990010044879. Aanand prasad kapoor. 0. hindi. LANGUAGE. LINGUISTICS. LITERATURE. 140 pgs.
- Mahamanav Buddha., 5990010116281. Rahul Sankratyayan. . hindi. LANGUAGE. LINGUISTICS. LITERATURE. 185 pgs.
- Mahatma Buddha., 5990010115444. Sukhsampati Roy Bhandari. 1920. hindi. LANGUAGE. LINGUISTICS. LITERATURE. 155 pgs.
- papancasudani majjhimanikayatthakatha of buddhaghosacariya., 5990010124569. J.H. WOODS AND D. KOSAMBI. 1922. hindi. LITRATURE. 334 pgs.
- Sankshipta Buddha jeevani., 1990010087671. Amritanand Sthavir. 2013. hindi. Buddha biography. 151 pgs.
- Siddharth Buddha., 5990010043250. Banaarasidaas 'Karunaakar'. 1955. hindi. LITERATURE. 156 pgs.
- Sri Buddha Geeta., 5990010116350. Swami satyadev ji paribrajak. . hindi. LANGUAGE. LINGUISTICS. LITERATURE. 126 pgs.

CHAPTER

उपसंहार

सिक्किम भारत का 22वां एवं महत्वपूर्ण राज्य है. यह छोटा राज्य अपनी समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास के लिए विशिष्ट है. न केवल सांस्कृतिक बल्कि अपने प्राकृतिक सौंदर्य, कला इतिहास एवं प्राचीन बौद्ध संस्कृति के लिए भी जाना जाता है.

बौद्ध भिक्षु गुरु रिन्पोचे का ८वीँ सदी में सिक्किम दौरा सिक्किम से सम्बन्धित सबसे प्राचीन विवरण है। अभिलेखित है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार किया, सिक्किम को आशीष दिया तथा कुछ सदियों पश्चात आने वाले राज्य की भविष्यवाणी करी। मान्यता के अनुसार १४वीँ सदी में ख्ये बुम्सा, पूर्वी तिब्बत में खाम के मिन्यक महल के एक राजकुमार को एक रात दैवीय दृष्टि के अनुसार दक्षिण की ओर जाने का आदेश मिला। इनके ही वंशजों ने सिक्किम की राजतन्त्र की स्थापना करी। १६४२ में ख्ये के पाँचवें वंशज फुन्त्सोंग नामग्याल को तीन बौद्ध भिक्षु- जो कि उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण से आये थे, द्वारा सिक्किम का प्रथम चोग्याल(राजा) घोषित किया गया। इस प्रकार सिक्किम में राजतन्त्र का आरम्भ हुआ।

फुन्त्सोंग नामग्याल के पुत्र, तेन्सुंग नामग्याल ने उनके पश्चात १६७० में कार्य-भार संभाला। तेन्सुंग ने राजधानी को युक्सोम से रबदेन्त्से स्थानान्तरित कर दिया। १७०० में सिक्किम पर भूटान का आक्रमण हुआ जिसमें चोग्याल की अर्ध-बहन था, जिसको राज-गद्दी से वंचित कर दिया गया था। तिब्बतियों की सहयता से चोग्याल को राज-गद्दी पुनः सौँप दी गयी। १७१७ तथा १७३३ के बीच में सिक्किम को नेपाल तथा भूटान के अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा जिसके कारण अन्तत: रबदेन्त्से का पतन हो गया।

सिक्किम हिमालय में स्थित एक छोटा सा देश है जिसका क्षेत्रफल 2818 वर्ग मील है और जो भारत के उत्तर पूर्व में है। इसके दक्षिण में तीस्ता घाटी है और उत्तर की तरफ हिमालय की पहाड़ियां तथा चीन का तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र है। सिक्किम के पश्चिम में नेपाल है, पूर्व में भूटान और दक्षिण में पश्चिम बंगाल

का दार्जिलिंग जिला है। सिक्किम और भूटान के बीच एक संकरा त्रिभुज जैसा क्षेत्र है जो तिब्बत में आता है और जिसे चुम्बी घाटी कहते हैं। इसकी सीमाएं सिक्किम और भूटान दोनों को छूती हैं और दक्षिणी क्षेत्र से संचार के लिए तिब्बत का यह परंपरागत रास्ता रहा है।

हालांकि सिक्किम का क्षेत्रफल बहुत कम है लेकिन इसकी भौगोलिक-राजनीतिक स्थिति ऐसी है जो इसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बना देती है। इसे 'गेटवे टु तिब्बत माना जाता है- खास तौर से ल्हासा तथा ग्यांत्से और यातुंग जैसे दक्षिण तिब्बत के मुख्य शहरों तक इसकी पहुंच की वजह से इसका महत्व बढ़ जाता है। हिमालय की पर्वत श्रृंखला को लांघने के लिए उत्तर पूर्व सिक्किम की तरफ से तीन रास्ते हैं। ये तीनों दर्रे हैं, जेलेप ला, नाथु ला और चो ला। सिक्किम की समूची आबादी को थोड़ी कठिनाई के साथ किसी विशाल आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय फुटबाल स्टेडियम में समाया जा सकता है। इसकी आबादी महज दो लाख है जबकि भूटान की आबादी 11 लाख और नेपाल की एक करोड़ तीस लाख है। सिक्किम की आबादी में तीन प्रमुख राष्ट्रीयताएं हैं जिनमें लेप्चा लोगों की आबादी 12 प्रतिशत है। इनकी भाषा सिक्किमी है जो तिब्बती से ही निकली हुई है। दूसरी राष्ट्रीयता के अंतर्गत भूटिया लोग आते हैं जो तिब्बती मूल के हैं और जिनकी आबादी 13 प्रतिशत है। तीसरी राष्ट्रीयता में नेपाली मूल के लोग हैं और इनकी संख्या सबसे ज्यादा है क्योंकि आबादी में ये लोग 73 प्रतिशत हैं।

सिक्किम में विविध समुदाय के लोग रहते हैं, प्रत्येक समुदाय अपने क्षेत्र की निष्पादन कलाओं में अपना योगदान दे रहा है। सबसे पहले 'लेपचा' जाति के लोग आकर सिक्किम में बसे। उसके पश्चात् 'भूटिया' आए जो तिब्बत और भूटान से आए, जो प्राचीन बसने वाले लोगों के वंशज हैं और अंत में

नेपाली आए जो नेपाल से आकर सिक्किम में बस गए। इनमें से प्रत्येक का सामाजिक अथवा धार्मिक उत्सव लोक गीतों तथा नृत्यों के लिए रंगपटल भिन्न है।

सिक्किम में वर्षभर महोत्सवों का आयोजन किया जाता है इसमें बौद्ध महोत्सव प्रचलित हैं. बुद्धिष्ट महोत्सव आमतौर पर उत्साह का अवसर होता है। उत्सव के दिन लोग पास के बौद्ध मठ में जाते हैं और मठ को भोजन, धन इत्यादि दान देते हैं और भगवान बुद्ध द्वारा दी गयी शिक्षा को सुनते हैं। महोत्सव की संध्या को बुद्ध, धर्म, संघ के सम्मान में नृत्य इत्यादि होता है। कुछ बुद्धिष्ट महोत्सव में लोसूंग, सागा दावा, द्रुकपा शेषी, बूम-चू, ल्हबाब दुचेन, पाँग-लाब-सोल प्रमुख है।

सिक्किम का प्रमुख बौद्ध मठ पेलिंग में स्थित पेमायांत्से है। इसके अलावा यहां पश्चिमी सिक्किम ताशिदिंग मठ भी है, जो सिक्किम के सभी मठों में सबसे पवित्र माना गया है। सिक्किम का सबसे प्राचीन मठ युकसोम है, जिसे ड्रबडी मठ के नाम से जाना जाता है। यह लहातसुन चेन्पों (सिक्किम के प्रमुख संत) का व्यक्तिगत आश्रम था जो संभवत: 1700 ईसवी में बना था। कुछ अन्य मठों का नाम हैं - फोडोंग, फेन्सांग, रुमटेक, नगाडक, तोलुंग, आहल्य, त्सुकलाखांग, रालोंग, लाचेन, एन्चेय।

सिक्किम के प्रमुख मठों दो प्रमुख एवं चर्चित नाम है रूमटेक एवं एंचेय।

'एंचेय मठ' गंगटोक के प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मठ पूजा का बहुत ही पवित्र और सुंदर स्थान है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, यह मठ जो बौद्ध धर्म के वज्रयना न्यिन्गामा समाज के अंतर्गत आता है, एक ऐसे स्थान में मौजूद है, जिस पर लामा द्रुपथेब करपो का आशीर्वाद बरसता है। 'एंचेय मठ' का अर्थ है- 'एकान्त मठ' और इसके अतिरिक्त एक और कथन है कि यह जगह हमारी रक्षा करने वाले

देवताओं 'कांगचेन्डजोंगा' और 'याबडियान' की उपस्थिति के लिए पवित्र है। यह मठ हर साल कुछ महत्वपूर्ण त्यौहार मनाता है, जैसे- 'डेटोर चाम/ चाम नृत्य महोत्सव', 'सिंघे चाम' और 'पंग लभसोल'।

रुमटेक मठ जिसे धर्मचक्र केंद्र के नाम से भी जाना जाता है, भारत का सबसे बड़ा बौद्धिक मठ है, जिसकी यात्रा पर आप एक बार ज़रूर ही जाएँ। तीर्थस्थान होने के साथ साथ, यह स्थान समुद्री तल से 5000 फीट पहाड़ पर गंगटोक के तरफ फेस करके बसा है। एक सोने का स्तूप मठ के अंदर ही स्थापित है जिसमें 16वें कर्मापा के अवशेष हैं। इस पूरे मठ के परिसर में एक तीर्थ मंदिर, एक मुख्य मठ, एक रिट्रीट केंद्र, एक संरक्षक मंदिर, भक्तीनों के लिए धर्मशाला, मठवासियों के लिए विद्यापीठ, और कुछ प्रतिष्ठानों के लिए कई संस्थाएँ भी हैं।

रुमटेक में, हर महीने, एक या दो सप्ताह के लिए आयोजित एक पूजा समारोह है। तिब्बती नव वर्ष दिवस, लॉसर, बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। लामो के प्रदर्शन के साथ अगले दो दिनों तक उत्सव जारी रहता है। हालांकि, लॉसर के उत्सव से पहले, मठ के भिक्षुओं ने महाकाल के सम्मान में एक सप्ताह तक पूजा की। लॉसार की पूर्व संध्या पर पीते हुए पिछले दो दिनों में रितिक नृत्य होते हैं हाल ही में, मठ के इतिहास में पहली बार, सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए नृत्य का प्रदर्शन खोला गया था। चौथे तिब्बती माह (मई-जून) के दौरान पारंपरिक चाम प्रदर्शनों के साथ एक हफ्ते भर वाले वजीराकिलया (दुबेचेन) या गुरु पद्मशंभव त्च्छू पूजा के साथ हर वैकल्पिक वर्ष का आयोजन किया जाता है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा हर साल 26 जून को कर्मम्पा के जन्मदिन को कम करने के लिए भी प्रदर्शन किया जाता है।

चाम, बौद्ध मठों में प्रदर्शन के धार्मिक नृत्य। 'चाम की उत्पत्ति तिब्बत में शामानिक औपचारिक नृत्य का एक पुराना रूप हो सकती है, लेकिन बौद्ध धर्म के भीतर समाज के विकास के सदियों ने बौद्ध धर्म

के साथ नृत्य करने की भूमिकाओं और नृत्य की थीम को जन्म दिया। 'चम, जो तिब्बती बौद्ध धर्म के साथ 16 वीं शताब्दी में मंगोलिया में और दक्षिणी मध्य एशिया के कुछ हिस्सों के साथ पेश किया गया, पूर्वी मध्य एशिया में धार्मिक मनोरंजन का प्रमुख रूप बन गया।

बौद्ध धर्म की स्वीकृति और प्रसार ने पूर्वी मध्य एशिया में मठों के समुदायों की अंतिम स्थापना का नेतृत्व किया। इन मठों को 'चाम के प्रदर्शन के लिए निर्धारित केंद्र बन गए पर्याप्त आकार और मठवासी आबादी के हर मठ ने अपना मुखौटा, वेशभूषा, सहारा, और संगीत वाद्ययंत्रों को बनाए रखा। क्षेत्रीय और सांप्रदायिक रूपांतरों के बावजूद, 'चाम का प्रदर्शन मूल रूप से एक ही है। मस्तिष्क के आंगन में 'चाम-आरए (नृत्य बाड़े)' नामक मंच का निर्माण किया जाता है उच्च लामाओं और विशिष्ट सीटों पर बैठे बड़प्पन के सदस्यों को छोड़कर, दर्शक डांस फ्लोर या जमीन के किनारे पर दर्शक बैठते हैं या बैठते हैं सींग और ड्रम वाले संगीतकार अपने स्थान लेते हैं, आमतौर पर एक कपड़ा चंदवा के नीचे। फिर, संगीत के साथ, विभिन्न नर्तक एक इमारत से या एक मंच के पर्दे के पीछे और प्रदर्शन करते हैं।

चाम नृत्यानुष्ठान में मुखौटों का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि मुखौटों के माध्यम से ही स्वरूपों का पता चलता है। चाम में प्रयुक्त होने वाले मुखौटे लकड़ी या मिट्टी के बने होते हैं। मुखौटों के रंग और उनके आकार धर्मरक्षक, देव, डाकिनी और अन्य दैवीय स्वरूपों के अनुसार होते हैं। मुखौटे प्रायः नीले, पीले, सफेद और लाल रंग के होते हैं। धर्मरक्षकों के लिए कंकाल के आकार वाले मुखौटे और वस्त्र होते हैं।

चाम नृत्य करने वाले भिक्षुओं के लिए वस्त्र भी विशेष प्रकार के होते हैं। रेशमी चाम-वस्त्रों को पडखेब कहा जाता है। चाम नृत्य के दौरान तलवार, कपाल, त्रिशूल, कील और धनुष-बाण आदि भी धारण किए जाते हैं।

चाम नृत्यानुष्ठान गोनपा के विशाल प्रांगण में खुले आसमान के नीचे किया जाता है। यह प्रांगण प्रायः मुख्य मंदिर के सम्मुख होता है।

हम बौद्ध दर्शन एवं कला को देखें तो बौद्ध धर्म एक विलक्षण दर्शन है. यह धर्म नहीं है. यह एक दार्शनिक राह है और इसे वैज्ञानिक कहा जा सकता है, क्योंकि यह मन का विज्ञान है. कहा जा सकता है कि भारतीय लोग एक विकसित वैज्ञानिक समझ रखते थे. वे तार्किक थे और उनके पास विचार और अभिव्यक्ति की स्पष्टता थी. प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय इस तथ्य को साबित करते हैं. इनके आधार पर तत्कालीन समाज का अनुमान लगाया जा सकता है, जिसने बौद्ध विचारधारा को जन्म दिया. वह एक आधुनिक समाज था, जहां तपस्या, अनुशासित विचार और गतिशील मति थी. इसकी झलक एशिया के अन्य प्राचीन शहरों में भी देखी जा सकती है. तिब्बत ने विशेष रूप से इस परंपरा को ग्रहण किया

मध्य एशिया में विकसित करने वाला अंतिम प्रदर्शन-कला शैली बौद्ध नैतिकता की भूमिका थी, जिसे ए-चे-लाह-मो कहा जाता था। नाटक पौराणिक और ऐतिहासिक आंकड़ों के जीवन पर आधारित हैं, और पोशाक और मुखौटे के माध्यम से नस्लीय मूल और खिलाड़ियों के नैतिक चरित्र का पता चला है। लोककथाओं, साथ ही साथ ऐतिहासिक और बौद्ध विहित साहित्य, एक-सी-ला-मो-मो में प्रस्तुत कहानियों के स्रोत हैं। अधिकांश नाटकों पौराणिक नायकों के बारे में हैं जो यह साबित करते हैं कि बौद्ध धर्म और उसके गुण अंत में सभी बुराइयों पर विजय प्राप्त करते हैं; लेकिन ऐसे व्यक्ति हैं जो ऐतिहासिक व्यक्तियों की कहानी बताते हैं।

यद्यपि मध्य एशियाई लोगों के बीच परंपराएं शामानिक अनुष्ठानों और 'चैम के विकास के बारे में अस्पष्ट हैं, हालांकि वे ची-ला-मो-मू की उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट हैं और यहां तक कि कला के ऐतिहासिक

रचनाकारों की ओर इशारा करते हैं। कुछ विद्वान नाटकों को भारतीय थिएटर के डेरिवेटिव मानते हैं, लेकिन तिब्बती परंपरा का दावा है कि नैतिकता के खेल का पहला प्रदर्शन थांग-स्टोन्ग रियाल-पो, जो कि 15 वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध ब्रिज निर्माता द्वारा निर्मित किया गया था।

इस प्रकार देखें बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्य नाट्य रूपों का अपना एक दार्शनिक एवं कलात्मक पक्ष है. सिक्किम के विभिन्न बौद्ध मठों में धार्मिक, अनुष्ठानिक नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं, जिसमें विविध नृत्य पद्धति, वेशभूषा एवं कथानकों का मंचन होता है. इनमें हम रंग तत्वों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं .